"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 02, Issue: 04, July-August 2015 *eISSN NO. 2394-5362*
Impact Factor (IIFS) - 0.776

अज्ञेय एवं मुक्तीबोध : एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ.ललिता राठोड
अस्सोसीइट
हिंदी विभाग
बलभीम कॉलेज,
बीड, महाराष्ट्र, भारत

Dr. Lalita Rathod
Associate Professor
Dept. of Hindi
Balbhim College
Beed, Maharashtra, India

नयी कविता के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय और मुक्तिबोध के काव्य का वस्तुनिष्ठ तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद महत्तवर्पूा निष्कर्षो का सहज आकलन किया जा सकता है।

अज्ञेय और मुक्तिबोध की रचना प्रक्रिया, आधुनिक काव्यधारा का नया समीकरण, प्रगति और प्रयोग के माध्यम से नयी कविता की सर्जन-प्रविधि को विशेष रुप से प्रभावित करती रही है। नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षर अज्ञेय जिन्होंने 'प्रयोगवाद' से चलकर 'चौथे सप्तक' तक समकालीन काव्यधारा के मोड़ो को 'तार-सप्तकों' के माध्यम से रेखांकित करने का प्रयास किया है। मुक्तिबोध के काव्य का प्रभाव नयी कविता पर विशेष रुप से दिखायी देती है। मुक्तिबोध का काव्य पाठक पर गंभीर घाव अंकित करता है। मुक्तिबोध और अज्ञेय की कवितायें नया बोध, नया शिल्प लेकर हिन्दी में आयी हैं।

नयी कविता की पृष्ठभूमि में विभिन्न स्थितियों का समावेश दिखाई देता है। इन स्थितियों का नयी कविता पर प्रभाव दिखाई देता है। नयी कविता अपने पूर्ववर्ती रुप से अलग होने के कारण ये स्थितियाँ ही हैं। इसलिए नयी कविता का स्वरुप एवं संवेदना को समझने के लिए विभिन्न स्थितियों को ठीक तरह से ध्यान में रखना आवश्यक है। नयी कविता युगीन परिस्थितियों की देन है। इन विविध परिस्थितियों के कारण नयी कविता विषय, वस्तु एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि से नवीनता से भरी हुई है।

हम देखते हैं कि नयी कविता अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। इसमें भाव एवं भाषा की दृष्टि से परिवर्तन दिखाई देता है। नयी कविता का विषय बोध भी नवीन है। भाषा को संस्कारित करने का कार्य नयी कविता ने किया है। उपमानों की दृष्टि से इसमें विलक्षणता दिखाई देती हैं। उपमानों के आधार पर ही नयी कविता ने भाषा के परम्परागत रुप को संकीर्णता से दूर कर व्यापक बनाया है। भाव एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि से नयी कविता अत्यन्त प्रभावशाली दिखाई देती है।

नयी कविता में यथार्थ को उसके सभी सन्दर्भो में प्रकट करने के लिए अनेक 'लम्बी कविताओं का' सृजन हुआ है। इस कारण कविता का परम्परागत स्वरुप ही बदला है। नयी कविता में इस कारण लम्बी कविताओं की संख्या अधिक दिखाई देती है।

युगीन भाव-बोध के कारण अपनी अभिव्यक्ति को प्रकट करने के लिए अनेक नये कवियों नें लम्बी कविताओं का निर्माण किया है। जीवन की संश्लिष्टता समझने के लिए, इन लम्बी कविताओं का महत्त्व अत्यधिक है।

नयी कविता में लम्बी कविताओं का एक आन्दोलन ही दिखाई देता है। इस आन्दोलन से प्रेरित होकर अनेक लम्बी कविताओ ने नयी कविता की 'वस्तु' एवं 'अभिव्यक्ति' में परिवर्तन किया है। इसलिए नयी कविता को समझने के लिए लम्बी कविता का आन्दोलन महत्त्वपूर्ण है।

नयी कविता में जितने भी आन्दोलन निर्माण हुए उसमें 'विद्रोही कविता' का आन्दोलन अनेक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस कारण कविता को सामाजिकता के साथ जोड़ा है। इसका सबसे बड़ा महत्त्व इस दृष्टि से है, कि समाज में जो अनेक दृष्टियों से स्थापित हैं, उनके शोषण को प्रकट करने का कार्य इस आन्दोलन ने किया है। इसलिए यह आन्दोलन सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। नयी कविता पर इस आन्दोलन का अनेक दृष्टियों से प्रभाव है।

'समकालीन कविता' का आन्दोलन नयी कविता की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। युगीन यथार्थ को इस आन्दोलन ने महत्त्वपूर्ण माना है। युग जीवन के साथ साक्षात्कार कर अज्ञेय और

मुक्तिबोध इन दोनों कवियों ने काव्य का सृजन किया है। इस कारण इस आन्दोलन के कवियों में यथार्थ अपने पूरे रंग के साथ अभिव्यक्त है।

नयी कविता अपने परिवेश के कारण ही परिवर्तित हुई है। इस काव्यधारा को अनेक रुपों से सजाने का कार्य विविध काव्य-आन्दोलनों ने किया हैं। हिन्दी की नयी कविता का अध्ययन करने के बाद यह बात भी स्पष्ट होती है कि इस कविता को प्रवाहित करने में अनेक कवियों ने अपना योगदान दिया है। इन कवियों में सबसे अधिक महत्तपूर्ण अज्ञेय एवं मुक्तिबोध है।

अज्ञेय एवं मुक्तिबोध नयी कविता के दो सशक्त हस्ताक्षर हैं। नयी कविता की विविध प्रवृत्तियों को इन दोनों को केन्द्रित कर देखा जाता है। इतना ही नही ंनयी कविताओं की उपलब्धियों को भी इन दोनों को आधार बनाकर समझा जाता है। इसलिए हम यह निःसंकोच रुप से कह सकते हैं कि हिन्दी की नयी कविता इन दोनों से अधिक सम्बन्धित है।

अज्ञेय के प्रकाशन काव्य-संग्रहों को देखने के बाद यह बात स्पष्ट होती है कि उनका काव्य कितना विस्तृत है। जीवन की प्रत्येक बात को कविता का आधार बनाकर उन्होंने काव्य का निर्माण किया है। इसलिए अज्ञेय के काव्य संग्रहों में जीवन के विविध रुप दिखाई देते हैं।

अज्ञेय का काव्य भाव एवं शिल्प की दृष्टि से अनूठा दिखाई देता है। विविध भाव अज्ञेय के काव्य में संश्लिष्ट रुप में दिखाई देते हैं, तो शिल्प नवीनता से भरा हुआ है। इसलिए अज्ञेय का काव्य भाव एवं शिल्प की दृष्टि से हिन्दी में नया सृजन है।

अज्ञेय की कविताओं का अध्ययन करने के बाद यह बात भी समझ में आती है कि वे छायावाद के प्रभाव से भरे हुए दिखाई देते हैं। उनकी शुरु-शुरु की कविताएँ छायावाद के प्रभाव से मुक्त हैं, यह भाव अन्तिम कुछ संग्रहों की कविताओं में कम दिखाई देता है, लेकिन छायावाद से अज्ञेय पूरी तरह मुक्त नहीं दिखाई देते हैं।

अज्ञेय के समग्र काव्य के अध्ययन से यह भी बात स्पष्ट होती है कि, अज्ञेय अनेक भारतीय एवं पाश्चात्य सिद्धान्तों से प्रभावित है। संस्कृत के सिद्धान्तों का उन्होंने बहुत अधिक आधार लिया है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि अज्ञेय जीवन और काव्य का अपनी परम्परा के आधार पर चिन्तन करते हैं, व्याख्या करते हैं और समाधान के सन्दर्भ में निष्कर्ष पर आतें हैं। इससे उनकी काव्यात्मा भारतीय संस्कारों से ओत-प्रोत है, यह बात सिध्द होती है। परिष्कार और नयी कल्पना के लिए कभी-कभी वे पाश्चात्य सिद्धान्तों का आधार लेते हैं। उनके काव्य के अनुशीलन से यह बात भी स्पष्ट होती है कि उनका काव्य कितना व्यापक एवं गहराई से भरा हुआ है।

अज्ञेय अपने काव्य विकास के दौरान अनेक वादों से सम्बन्धित रहे हैं। अनेक वादों से जो अच्छा है, उसे उन्होंने ग्रहण किया है, लेकिन किसी एक वाद से सम्बन्धित अज्ञेय नहीं रहे हैं। इसी विकसित व्यक्तित्व ने हिन्दी में इतनी मात्रा में कविताओं का सृजन किया है।

अज्ञेय के काव्य में जीवन के जैसे विविध रंग दिखाई देते हैं, वैसे ही अभिव्यक्ति के भी नये-नये रंग दिखाई देते हैं। उनके काव्य के आधार पर यह बात स्पष्ट होती है कि हिन्दी कविता को विविध दृष्टियों से रंगाने का कार्य उन्होंने किया है। अज्ञेय गहन गम्भीर व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। उनके व्यक्तित्व के अनुरुप ही उनकी कविता भी अत्यन्त गम्भीर रही है। इसलिए यह कविता कभी-कभी बोध की दृष्टि से आसान नहीं होती है।

अज्ञेय ने नये शब्दों का निर्माण कर हिन्दी काव्य-भाषा को समृद्ध बना दिया है। उन्होंने शब्दों का अन्वेषण अधिकांश मात्रा में संस्कृत के आधार पर ही किया है। लेकिन विदेशी शब्दों के आधार पर भी यह अन्वेषण दिखाई देता है। इसलिए अज्ञेय की कविता परम्परागत हिन्दी कविता से अलग दिखाई पडती है।

अपनी कविताओं में अज्ञेय ने अनेक सिद्धान्तों की स्थापना भी की है जैसे व्यक्तिवाद, क्षणवाद आदि। इन सिद्धान्तों का महत्त्व प्रकट करने का कार्य भी उन्होंने अपनी कविताओं के आधार पर

किया है। उनका व्यापक काव्य सृजन देखने के बाद उनका काव्य अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्तपूर्ण है, यह बात स्पष्ट होती है। अज्ञेय के काव्य में सतत प्रयोग दिखाई देते हैं। यह बात स्पष्ट होती है। अज्ञेय के काव्य में सतत प्रयोग दिखाई देते हैं। वे प्रयोगधर्मी कवि होने के कारण प्रयोग की गतिशिलता उनके काव्य में सहज सम्भव बात है। लेकिन उनके काव्य की विशेषताओं को देखने के बाद यह बात भी स्पष्ट होती है कि उन्होंने केवल प्रयोग नहीं किये, बल्कि सार्थक प्रयोग किए हैं।

संस्कृत, इंग्लिश, उर्दू आदि भाषाओं के गहरे अध्ययन के कारण और मौलिक चिन्तन के कारण उनका काव्य गम्भीरता धारण कर चुका है। इस काव्य में वैचारिकता इतनी है कि कभी-कभी सम्प्रेषण में बाधा होती है। लेकिन जैसे भी हम गम्भीरता के आधार पर इसका अध्ययन करते हैं, तो इस काव्य की शक्ति समझ में आती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि उनका काव्य सहज-साध्य नहीं है। इस काव्य की गरिमा पाने के लिए गम्भीरता आवश्यक है।

अज्ञेय अपने सम्पूर्ण काव्य में प्रयोगवादी ही दिखाई देते हैं। उन्होंने यह ठीक तरह से समझा कि शब्दों के रुढ़ अर्थ उनकी अनुभूति को पाठक तक पहुँचाने में असमर्थ हैं। इसलिए अज्ञेय ने अपने काव्य में, शब्दों में नये अर्थ भरने की अपार चेष्टा की है। इन प्रयत्नों के कारण ही प्रयोगों की निर्मिती हो चुकी हैं। इन्हीं प्रयोगों के आधार पर परिवर्तित करने वाले अज्ञेय सिद्धहस्त कवि हैं। अज्ञेय की सृजनधर्मी प्रवृत्ति को देखने के बाद यह बात भी स्पष्ट होती है कि उनका काव्य छायावाद या

प्रयोगवाद की इकहरी मानसिकता से बहुत दूर है। छायावाद के चिन्तन और प्रयोगवाद के समाज के चिन्तन और प्रयोगवाद के समाज दर्शन के मिश्रण को आधार बनाकर अज्ञेय ने काव्य का निर्माण किया है। इसलिए इस काव्य में व्यक्तिवाद के साथ-ही-साथ सामाजिकता भी दिखाई देती है ।

अज्ञेय की कविता मूल्यों से युक्त दिखाई देती है । मनुष्य को श्रेष्ठ मानने वाला उनका काव्य होने के कारण उसकी प्रगती के लिए आवश्यक सभी मूल्यों का चित्रण उनके काव्य में दिखाई देता हैं । वे भाषा के प्रति अधिक सचेत कवि दिखाई देते हैं । प्रतीकों, बिम्बों के आधार पर उन्होंने अपने काव्य को सौन्दर्य से युक्त बनाया है। इसलिए उनके काव्य में सौन्दर्य के विविध रुप दिखाई देते हैं। इसी सौन्दर्य के कारण ही उनका काव्य पाठकों को प्रभावित करता हैं।

अज्ञेय का काव्य अनेक विशेषताओं से युक्त है। उनके काव्य में विविध भावों के दर्शन होते हैं। नूतन विषय एवं नूतन शैली-शिल्प के प्रभाव को आत्मसात कर उन्होंने हिन्दी कविता को परिवर्तित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कविता की स्वस्थ परम्परा को आगे बढाने में उनका मौलिक योगदान रहा है। इसी योगदान के आधार पर ही उन्होंने हिन्दी कविता को आन्तरिक एवं बाह्य दृष्टि से नये रुप में सजाया है। उनकी यह 'नवीनता' हिन्दी की

बहुत बडी निधि मानी जाती है। इसी निधि के आधार पर ही हिन्दी की समकालीन कविता आगे बढ रही है।

अज्ञेय ने अपनी कविताओं में भाव और शिल्प की दृष्टि से विविध प्रयोग किए हैं। उन्होंने एक जगह कहा भी है- "मैं उन व्यक्तिओं में से हूँ और ऐसे व्यक्तिओं की संख्या शायद दिन-प्रतिदिन घटती जा रही हैं-जो भाषा का सन्मान करते हैं और अच्छी भाषा को अपने आप में एक सिद्धि मानते हैं।

अज्ञेय 'तार सप्तक' के सातवें कवि, चारों सप्तकों के सम्पादक और प्रयोगवाद के प्रवर्तक हैं। उन्होंने व्दितीय समरोन्तर हिन्दी कविता को नयी दिशा और विकास दिया है। उनका काव्य पूर्ववर्ती और परवर्ती कवियों से अलग प्रकार का है। 'इत्यलम्' तक कवि पर छायावाद का प्रभाव दिखाई देता है। अपने सूक्ष्म कलात्मक बोध, व्यापक जीवनानुभूति, समृध्द कल्पनाशक्ति, सहज सांकेतिक अभिव्यंजना के व्दारा परिचित भावों के नूतन और अनछुए रुपों को उन्होंने उजागर किया हैं। निजी अनुभूति को स्वनिर्मित शिल्प के माध्यम से व्यापक करने के कारण वे हिन्दी-जगत् में आज भी चर्चा का विषय बने हुए हैं। हिन्दी कविता को नयी वस्तु तथा नयी दृष्टि देने में उनका असाधारण योगदान रहा है। यही अज्ञेय के काव्य का महत्त्व है।

मुक्तिबोध का काव्य अनेक विशेषताओं से भरा हुआ है। यह काव्य आधुनिक समय के आतंकित करने वाले सत्य से हमारा साक्षात्कार करता है। विशाल अनुभव का भंडार लिए एवं परिवेश के साथ गहरे रुप से जुडकर ही कवि ने इस काव्य का निर्माण किया है। जनवादी काव्य की विशेषताएँ इसमें प्रभावी रुप से अंकित है। इसलिए हम कह सकते हैं कि मुक्तिबोध का काव्य पाठक पर गम्भीर घाव अंकित करता है। शक्ति और उत्साह युक्त उनका काव्य हिन्दी कविता में वैशिष्ट्यपूर्ण रचनाधर्मिता के कारण आज भी चर्चा का विषय बना हुआ है।

मुक्तिबोध का काव्य सामाजिक उद्देश्यों को आधार बनाकर निर्माण हुआ है। इसमें ज्ञानात्मक संवेदना की मात्रा अधिक है। निराला की तरह मुक्तिबोध भी आत्म-प्रतीति, आत्मशोध एवं विद्रोह को कविता में महत्त्वपूर्ण मानते हैं। भारतीय समाज व्यवस्था की अनेक विसंगतियों को शब्द देने का कार्य मुक्तिबोध ने किया है। हम संक्षेप में कह सकते हैं कि संघर्षरत मानव की पीडा का बोध की मुक्तिबोध का काव्य है।

नयी कविता नया बोध एवं नया शिल्प लेकर हिन्दी में आयी है। इस नयी कविता ने जीवन के अनेक रुपों को प्रकट किया है। इस नयी कविता को समृद्ध बनाने में अज्ञेय एवं मुक्तिबोध का योगदान महत्त्वपूर्ण है। अज्ञेय के काव्य में रुढ़ि-विरोध एवं नवीनता का आग्रह अत्यधिक है। उन्होंने

इसको आधार बनाकर अपने काव्य में विविध प्रयोग किये हैं। इन प्रयोगों का प्रभाव नयी कविता पर दिखाई देता हैं।

अज्ञेय प्रयोग को काव्य के लिए आवश्यक मानते हैं, क्योंकि प्रयोग निरन्तर होते आये हैं और प्रयोगों के व्दारा ही कविता का कोई भी कला, कोई रचनात्मक कार्य आगे बढ सकता है। अज्ञेय की इस विचारधारा का अनेक नये कवियों ने अनुसरण किया है। इस कारण हिन्दी कविता में संरचनात्मक बदलाव भी आया है। अज्ञेय की प्रयोगवादिका का प्रभाव नयी कविता पर स्पष्ट रुप से दिखाई देता है।

अज्ञेय के काव्य में भारतीय तथा पाश्चात्य विचारों का प्रभाव दिखाई देता है। इन प्रभावों को ग्रहण कर अज्ञेय ने हिन्दी काव्य में नया रुप निर्माण किया है। कविता के मूल रुप को ही उन्होंने परिवर्तित किया है। नयी कविता को नया रुप एवं नये ढंग में बनाकर प्रकट करने में उनको बहुत अधिक सफलता प्राप्त हुई है।

मुक्तिबोध अपनी रचनात्मक ईमानदारी और जनवादी चेतना के कारण युवा-पीढी के पथ-प्रदर्शक बने हैं। हिन्दी के वे पहले कवि हैं, जिन्होंने यह प्रमाणित कर दिया कि बिना आख्यान के भी लम्बी कविता लिखी जा सकती है। यदि कविताओं में अपने समय की धडकन को, वास्तविक जीवन की जटिलता को व्यक्त करना है तो परम्परित ढाँचे को छोडना होगा। मुक्तिबोध के बाद लम्बी

कविताओं की एक अटूट श्रृंखला मिलती है। इन लम्बी कविताओं को मूल्यों से भरने का कार्य उन्होंने किया है। इसलिए हम यह विश्वास के साथ कह सकते हैं कि लम्बी कविताओं की दृष्टि से मुक्तिबोध का नयी कविता में अत्यधिक महत्त्व है।

मुक्तिबोध की कविता का प्रभाव है कि आज प्रतिबद्धता, प्रगतिशीलता, जनवादी-चेतना, सामाजिक दायित्व जैसे शब्दों के पुनर्वास के लिए हिन्दी में एक तीखी और नैतिक बहस जारी है। बावजूद इसके इस बहस में और इसका दावा करने वाली रचनाओं में बहुत कुछ ऐसा है, जो छद्म और फैशन है; इस बहस के पुनरारम्भ का श्रेय मुक्तिबोध के वैचारिक और सृजनात्मक कृतित्व को ही जाता है। मुक्तिबोध की यह देन हिन्दी की नयी कविता की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मुक्तिबोध की यह देन हिन्दी की नयी कविता की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। केवल हिन्दी कविता की दृष्टि से ही नहीं, सम्पूर्ण भारतीय कविता की दृष्टि से मुक्तिबोध की प्रतिबद्धता अपना महत्त्व रखती है।

हम कह सकते हैं कि जन कविता की दृष्टि से मुक्तिबोध के अनेक प्रभाव हिन्दी की नयी कविता पर अधिक दिखाई देते हैं। आज के अनेक नये कवि अपने आपको मुक्तिबोध की परम्परा का कवि मानते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि मुक्तिबोध ने जन कविता को कितना सशक्त एवं आवश्यक रुप में प्रस्तुत किया है। हिन्दी की आज की कविता जनकविता की तरह ही है। इसलिए मुक्तिबोध के कावय का महत्त्व सिद्ध होता है।

मुक्तिबोध फैंटेसियों के माध्यम से अपने त्रासद युगबोध को सम्प्रेष्य बनाने में सर्वथा सक्षम रहे हैं। उनकी फैंटेसियाँ लक्ष्य-प्रेणित हैं और उन्हें स्वप्न कथा जैसी गत्यात्मक श्रृंखला का रुप दिया गया है। नयी कविता के फैंटेसियों की दृष्टि से समृद्ध करनें मे मुक्तिबोध ने अहम् भूमिका निभायी है।

भाषा की दृष्टि से मुक्तिबोध ने अपने काव्य में विविध प्रयोग किये हैं। ये प्रयोग भाव और शिल्प की दृष्टि से हैं। इन प्रयोगों के कारण नयी कविता की भाषा में नया रुप आया है। इस नये रुप को अपनी अनुभूति और अभिव्यक्ति के आधार पर साकार करने का कार्य मुक्तिबोध ने किया है। उनकी इस भाषा का अनेक नये कवियों पर प्रभाव दिखाई देता है।

मुक्तिबोध ने अपने काव्य के अनुकूल ही नये-नये बिम्बों का प्रयोग किया है। उनके बिम्ब इतने सजीव हैं कि पाठक को जीवन-सत्य चित्रमय रुप में दिखाई देता है। उनके इन बिम्बों का नयी कविता पर स्पष्ट रुप से प्रभाव दिखाई देता है। इस कारण नयी कविता बिम्ब-धर्मी बनी है। बिम्ब के साथ-साथ उनकी प्रतीक योजना भी महत्त्वपूर्ण है। नयी कविता की भाषा-शैली परिवर्तित हो चुकी है। नयी कविता को शिल्प की दृष्टि से वैविध्यपूर्ण बनाने में मुक्तिबोध के प्रतीकों के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता।

मुक्तिबोध के काव्य का हिन्दी की नयी कविता पर अनेक दृष्टियों से प्रभाव हुआ है। विविध शीर्षकों के आधार पर उनके काव्य का अध्ययन प्रस्तुत करने के बाद हम यहाँ निःसंकोच रुप से कह सकते हैं कि हिन्दी की नयी कविता पर मुक्तिबोध के काव्य का बहुत अधिक गहरा प्रभाव दिखाई देता है। इस प्रभाव के कारण ही नयी कविता भाव एवं शिल्प की दृष्टि से परिवर्तित हो चुकी हैं। भाव और शिल्प की दृष्टि से एक ऐसी नयी परम्परा मुक्तिबोध ने नयी कविता में स्थापित की हैं कि अनेक नये कवि इस परम्परा को आगे बढा रहे है। यही मुक्तिबोध का हिन्दी की नयी कविता पर प्रभाव है।

समकालीन कविता की दृष्टि से अज्ञेय एवं मुक्तिबोध के काव्य का व्यापक तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद, यह बात स्पष्ट होती है कि समकालीन कविता की दृष्टि से ये दानों कवि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहे हैं। नयी कविता को समृद्ध बनानें में इन दोनों का योगदान वैशिष्ट्यपूर्ण रहा है।

अज्ञेय एवं मुक्तिबोध अनेक पाश्चात्य विचारों से प्रभावित रहे हैं। अज्ञेय पर यह पाश्चात्य प्रभाव तुलना में अधिक दिखाई देता है। मुक्तिबोध ने पाश्चात्य प्रभाव सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए ग्रहण किया है।

अज्ञेय एवं मुक्तिबोध का काव्य विद्रोह से भरा हुआ दिखाई देता है। इसी विद्रोह के आधार पर इन दोनों कवियों ने समकालीन कविता के भाव एवं शिल्प को पूरी तरह से परिवर्तित किया है। हिन्दी

की नयी कविता को नया रुप एवं सौन्दर्य देने का कार्य इन दोनों कवियों ने किया है। इन दोनों से प्रभावित होकर अनेक नये कवि हिन्दी में काव्य-सृजन कर रहे हैं। इन दोनों की अनेक परम्पराओं को आगे बढाने का कार्य कर रहे हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि अज्ञेय एवं मुक्तीबोध का काव्य समकालीन कविता की दृष्टि से प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण है।

नयी कविता की दृष्टि से अज्ञेय एवं मुक्तिबोध दोनों ही महत्त्वपूर्ण कवि दिखाई देते हैं। अज्ञेय ने अपने विचारों के आधार पर प्रयोगवाद और नयी कविता की भूमिका को प्रभावित किया है तो मुक्तिबोध के विचारों ने सातवें दशक की कविता को प्रभावित किया है। इसलिए समकालीन कविता में अज्ञेय एवं मुक्तिबोध 'शलाका पुरुष' दिखाई देते हैं।

इन दोनों के समग्र काव्य का अनुशीलन करने के बाद, यह बात स्पष्ट होती है कि अज्ञेय के काव्य में आधुनिक भाव-बोध के व्यापक चित्र दिखाई देते हैं तो मुक्तिबोध के काव्य में सामाजिक यथार्थ के अनेक चित्र दिखाई देते हैं। अज्ञेय का काव्य अत्यन्त गम्भीर दिखाई देता है तो मुक्तिबोध का काव्य अत्यन्त गहन दिखाई देता है । दोनों कवि कथाकार होने के कारण 'वस्तु' को प्रदर्शित करने में सफल दिखाई देते है। दोनों का काव्य अन्तरात्मा की पुकार होने के कारण सहज साध्य नहीं है।

समकालीन कविता को भाव और शिल्प की दृष्टि से समृद्ध बनाकर स्वस्थ परम्परा निर्माण करने में अज्ञेय एवं मुक्तिबोध अत्यन्त सम्मानित एवं प्रतिष्ठित कवि हैं।

नयी कविता के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय एवं मुक्तिबोध के काव्य का व्यापक अनुशीलन करने के बाद हम यहाँ अन्तिम निष्कर्ष रुप में कह सकते हैं कि हिन्दी की समकालीन कविता अज्ञेय एवं मुक्तीबोध के काव्य सिद्धान्त एवं आदर्श से ही नहीं उनके विचारों से भी अत्यधिक रुप में प्रभावित हुई है। आज की हिन्दी की कविता इन दोनों को आधार बनाकर वैभवशाली रुप में विकसित दिखाई देती हैं। आज की हिन्दी की कविता अखिल भारतीय तथा विश्व के सन्दर्भ में सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त है। समकालीन कविता को यह सम्मान तथा प्रतिष्ठा दिलाने में अज्ञेय एवं मुक्तिबोध ने अहम् भूमिका निभायी है। इसलिए समकालीन कविता की दृष्टि से ये दानों कवि अत्यनत महत्त्वपूर्ण हैं।

http://www.ksijmr.com